पद्मप्रभ मलधारी देव

जीवन-परिचय : पद्मप्रभ मलधारी देव कुन्दुकुन्द के मूलसंघ, पुस्तकगच्छ और देशीयगण के विद्वान वीरनन्दि व्रतीन्द्र के शिष्य थे। मलधारी इनकी उपाधि थी। यह उपाधि अनेक विद्वान आचार्यों के साथ लगी रहती थी।

पद्मप्रभ ने अपने को सुकविजन-पयोजमित्र, पञ्चेन्द्रियप्रसरवर्जित और गात्रमात्रपरिग्रह—इन विशेषणों वाला बताया है। इन तीन विशेषणों से ज्ञात होता है कि पद्मप्रभ अच्छे कवियों के प्रेरक थे, पंचेन्द्रियों के प्रसार से रहित थे, जितेन्द्रिय थे तथा शरीरमात्र परिग्रह के धारी थे, नग्न दिगम्बर थे।

पद्मप्रभ मलधारी देव का समय ई. सन् 1103 के पूर्व माना जाता है। परन्तु कुछ प्रमाणों के आधार पर पद्मप्रभ का समय ई. सन् की 12वीं शती भी सिद्ध होता है।

रचना-परिचय : इनके द्वारा रचित ग्रन्थ निम्न हैं :

1. नियमसार टीका : आचार्य कुन्दकुन्द के द्वारा रचित नियमसार पर इन्होंने एक संस्कृत टीका बनाई है, जिसका नाम 'तात्पर्यवृत्ति' है।

'तात्पर्यवृत्ति' में पद्मप्रभ ने यथास्थान अनेक विद्वानों और उनके ग्रन्थों के पद्यों को उनके नाम के साथ ग्रहण किया है और स्वयं भी अनेक सुन्दर पद्य बनाकर उपसंहार के रूप में दिये हैं। इस टीका में नियमसार के विषय का अच्छा स्पष्टीकरण है।

2. पार्श्वनाथ स्तोत्र : इस स्तोत्र में 9 पद्य हैं। स्तोत्र में मरुभूति और कमठ के भवों की चर्चा करते हुए पार्श्वनाथ के अन्तरंग और बहिरंग गुणों का वर्णन किया गया है।